।। अर्श आरती ।।

।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।।

सब कर तत्व निचोय के, तकमा बना एक हीर । सो वर्दी हंसन को मिली, साँईं नाम गम्भीर ।। साँईं सुमिरै जीव तरै, पाप जाय सब धोय। देखि यमराज डेरात हैं, जाके गले में तकमा होय।। सकल भरम सब खोइ के, पद कर पच्छा लीन ।.आपन हंस बिचारि के, सतगुरु तकमा दीन्ह ।। चौदह तबक तूरि के, जीत लिया सत धाम । चौथ लोक मैदान में, तकमा मिला इनाम ।। एक तकमा आशिक पिहरै, दुई पहिरैं अवधूत । मोहन साँचे सतगुरु वे हैं, जो शब्द गहा मजबूत ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। हुकुम धूनी को साँईं ने दिया । आशिकों पर दाया किया ।। सत पुरुष की धूनी जरै, सकल काल डेराय । गज नाहर कीरा बीछी, दूरि भागि सब जाय ।। निर्भय नींद हंसा सोवै, करम भरम को जारि । मोहन सतगुरु चरण प्रताप बड़ा है, कभी न आवै हारि ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। बहु प्रकार से अरश गोहरावा, नाना बिजन बानी । मोहन मूरूख बूझै नाहीं,

बूड़ि मरै बिन पानी ।। मोहन मेरी चरण बन्दगी, साँई कीन्ह कबूल । अभय खिलती दाया भइ, लाग सरब सो तूल ।। साँई सब को सार है, चतुर बूझि मत लीन । हंस तारन हेत को, अरश पठै बहु दीन्ह ।। सुनत अरश की बात को, पाप जाय सब भागि । तुरतै पापी तरत हैं, जो रहैं चरन मे लागि ।। अविगत लीला अरश है, परै लोक की हाल । पूर्ण ब्रह्म मिलावते सतगुरु दीनदयाल ।। अस विश्वास जाके होइ, सोइ बहादुर हंस । वे जुदा कभी ना रहते, हरदम सतगुरु संग ।। माल मुलुक सब छोड़ि के, हंस अलग घर कीन्ह । वे मोहन फैसल भय, काल से फरचा लीन ।। सदा आनंद वे रहत हैं, कि बारबार हरषाय । सतगुरु के चरणन परै, छाड़ि अलग ना जाँय ।। तन मन बाजी लाय के, सुजन पुरुष को लीन । वै मोहन माहिर भये, सतगुरु दाया कीन।। परै मीत हैं सतगुरु साँई, हंसन को सिरताज। जीव छोड़ावैं बन्दी से, देंय अभय पद राज ।। सतगुरु मीत पुरान है, सगा नेर नात पद नीक । तेहि सम्बन्ध गन्धि सब छूट़ै, यह मत है तहकीत ।। बानी बैरष शब्द फरहरा, धूनी जरै अकाश । सत्य का शंसा सुरति गाड़ै, जोगी मोहन शाह ।। ध्यान कै धूप ज्ञान कै आहुति,

परै ज्योति लखि लीन । वोहंग सोहंग स्वाहा होत है, हुन्नि पच्चीसौ दीन ।। जेस दिवस एक तेस रात है, जिनके एक नाम की आस । शब्द सिपाही की चौकी मा सोहत मोहन शाह ।। सतगुरु चरण विनवत हूँ की, साँईं होउ सहाय । आठ पहर बत्तिस घरी, सुरति रहेव टकलाय ।। साँईं एहि जग आइ के, ऐगुण बहुत हम कीन्ह । मोहन शाह धन्य हो सतगु, जो ऐगुण मेटि शरन मा लीन ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। आरती ।।१।। आरति अलख नाम गुन गावै, निर्भय रुप सदा सुख पावै ।। नाम कर दीप सुरति कर बाती, तत्व कर तेल मिलावै ।।१।। आठ पहर की नाम आरती, एकै रुप सदा उर लावै ।।२।।कोई-कोई संत जानि सुख पावै, लखै ज्योति अनुभव गोहरावै ।।३।। मोहन शाह पुरुष वह निर्मल, तन मन सुरति न्यौछावरि पावै।।४।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। सतगुरु आरति करहुँ तुम्हारी, सुनिये अरज हमारी ।। लेहु चढाय गगन घर अपने, सुरति मोरि संभारी ।।१।। जँह नहिं काल करम गति व्यापै, नहिं संशय संसारी ।।२।। निरखत रहौं रैन दिन प्रभु तुमका, नख शिख छवि अनुहारी ।।३।। मोहन शाह चरण करौं

आरति, बार-बार बलिहारी।।४।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। अलख बिहारी शरण हूँ तुम्हारी, भुजा गहि लेव हमारी ।। पंइयाँ परुँ तिहारी, साँईं मोहन राखौ लाज हमारी ।। साँई सुनो पुकार, दीन दुख दहन बिहारी ।। तुम्हरी बँहिया बल आस, दास बहु भये सुखारी।। प्रभु तुम अनाथ के नाथ, त्रास आरति की ़टारी। महाआनंद अधम उध्दार, यार मोहन रसि़यारी ।। सत्य साँईं की चरण बन्दगी बारम्बार ।। साँईं लीजै खबरिया हमारी ।। साँईं तुम्हारे नाम पर वारी हुआ मैं, सब हंसन के बादशाह हे साँईं मेरा सरकार । अजपा कीन्हा गागरी सुरति कीन्हा डोर। प्रेम की पटिहर पड़ी तुम पियो बोर बोर । मोहन भर देव गगरिया हमारी, साँईं लीजै खबरिया हमारी ।।१।। इश्क किश्ती बनी है, आह का दरियाव । प्रेम की बल्ली पड़ी तुम खेवो वेड़ा पार, मोहन खेव दो नवरिया हमारी । साँईं लीजै खबरिया हमारी ।।२।। दिन तो कटै तुम्हारी याद में मुश्किल कटत हैं रैन, साँईं मोहन तुम्हारे दीदार बि़ना मुझको पड़ै ना चैन । सूनी डारी सेजरिया हमारी ।। साँईं लीजै खबरिया हमारी ।।३।। अहमक हूँ मैं आस का, समद का हूँ दिलदार। गदा बना साँईं मोहन का खड़ा

रहूँ दरबार, नीकि लागै सुरतिया तुम्हारी ।। साँईं लीजै खबरिया हमारी ।।४।। तुम सर्वग्य जगत गुरु स्वामी, करहूँ कृपा उर अंतर्यामी । साँईं सतगुरु समर्थ हो, कि तुम हो तारन हार । बार बार प्रभु चरणन परुँ, सेवक का करो उध्दार । सात द्वीप नौ खंड में, सतगुरु करैं सो होय । जय सतगुरु मर्दाने की लाज राखौ इस बाने की ।।

।।सत्य साँईं की दाया से अर्श आरती सम्पूर्ण ।।